RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 1 अंक 3 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का प्रयाय

जयवर्द्धन

liverajsamand.com

हिन्दी मासिक पत्रिका

नवम्बर 2017

पेज संख्या : 28 राजसमंद

44 साल बाद छलकी राजसमंद झील @ P-5

बढ़ते भ्रष्टाचार के लिए आखिर कौन जिम्मेदार ? @ P-11

रियल स्टोरी : बेटी की चरित्रहीनता ने पिता को बनाया कातिल @ P-10

मेवाड़ री चौपाल : कान्यो जीवतो पूरबज वेई ग्यो @ P-21

प्रकाशन की तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

Kids Corner

अपने लाड़ले बच्चों का जन्मदिन **जयवर्द्धन पत्रिका** के साथ मनाएं।
दिसम्बर माह में जिन-जिन बच्चों का जन्मदिन आ रहा हैं।
उनका नाम, पिता का नाम, जन्म दिनांक, पता व फोटो हमें भेजें -

फोटो नि:शुल्क प्रकाशित किया जाएगा।

ई-मेल jaivardhanpatrika@gmail.com अथवा कार्यालय पते पर भिजवाएं।

अपने **बिजनेस**
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।

स्पेशल ऑफर

विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-

सम्पर्क

शक्ति एडवरटाइजिंग

C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9950084705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

सम्पादकीय

शहर-गांव आमने सामने

चार दशक बाद झील छलकी, तो इस ऐतिहासिक पल को लेकर समूचा राजसमंद झूम उठा। पानी की पूजा हुई, मिठाईयां बंटी और पटाखे भी छूटे। छलकती झील के बीच खुशियों की बयार में खूब नाचे-कूदे भी। एक सप्ताह तक छलकती झील किनारे मेले सा माहौल ही रहा, मगर इस उल्लासित माहौल का सदा बनाए रखने के लिए किसी से नहीं सोचा।

किसान बोले- सिंचाई लिए झील से पानी ले जाना जरूरी, शहरवासी बोले पेयजल जरूरी। दोनों तरफ से अपना हक जताया, अधिकार बनाए और कानूनी चेतावनियां भी दी गई। इस बीच जल संसाधन विभाग ने 14 फीट तक पानी सिंचाई के लिए छोड़ने का तकनीकी एजेंडा रख दिया। जरूरी, गैर जरूरी और तकनीकी बातों के विपरीत इस हकीकत से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि क्षेत्र में 100 फीसदी रकबे में बुवाई नहीं होगी और सिंचाई विभाग का तर्क तो सौ फीसदी खेतों में बुवाई पर आधारित है।

ऐसे में औसत सत्तर से अस्सी फीसदी रकबे पर ही फसलों की बुवाई होगी और सिंचाई के लिए भी उतने ही कम पानी की जरूरत रहेगी। इससे शहर-गांवों की डिमांड और प्रशासन के निर्णय पर सवाल खड़े हो गए। इस बीच भ्रम व अफवाहों का दौर भी खूब चला, जिसने ग्रामीणों और शहर के लोगों में तनाव के हालात उत्पन्न किए। एक बाद शहरवासी एकजुट हुए, तो दूसरी ओर ग्रामीण एकत्रित होकर प्रशासन के पास पहुंचे। फिर भी शासन व प्रशासन द्वारा 14 फीट तक राजसमंद झील के खाली होने के भ्रम को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं की गई।

राजसमंद झील के सौन्दर्यीकरण, संरक्षण, पर्यटन को बढ़ावा देने की खोखली बातें तो कई हुई, लेकिन उसे साकार करने के लिए अब तक कोई ठोस प्रयास नहीं हुए। सिंचाई के लिए जितना पानी छोड़ना जरूरी है, उतना ही आवश्यक झील में पानी संरक्षित रखना है। शहर-गांव को मिल बैठकर उचित हल निकालना चाहिए। इसके लिए न सिर्फ अधिकारी, बल्कि जनप्रतिनिधि भी आगे आए, तो सार्थक परिणाम आ सकते हैं। इससे झील के संरक्षण, सौन्दर्य की बात भी संभव होगी।

जयवर्द्धन
सामाजिक अभिरूचि का प्रयाय

website : liverajsamand.com

सम्पादक व प्रकाशक	ललिता राठौड़
प्रबंध निदेशक	विजय शर्मा
सह सम्पादक	हितेन्द्रसिंह चौहान
संवाददाता	नरपतसिंह राठौड़
	हीरालाल, भीम
ग्राफिक डिजाइन	महेन्द्रसिंह मोजावत
फोटोग्राफी	भरत पालीवाल
	(श्रीराम स्टूडियो, कांकरोली)

स्पेशल अंक

पिछला अंक

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9950084705

Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

संपादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद राजस्थान से मुद्रित।

नोट : पुस्तक में प्रकाशित हर सामग्री में यथासंभव सावधानी रखी। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका

आपकी खबर
अब आपकी जुबानी...

अब आप भी भेज सकते हैं खबर

आपके शहर व गांव से जुड़ी
मूलभूत समस्या, नवाचार, आयोजन, मुद्दे,
लेख, चुटकले, कहानी, कविता
हमें भेजे।
jaivardhanpatrika@.gmail.com

इस अंक में खास...

1. 44 साल बाद छलकी राजसमंद झील पेज – 5

2. संस्कृति : झील को ओढ़ाई डेढ़ किमी. की चुनर पेज – 8

3. रियल स्टोरी : बेटी की चरित्रहीनता ने पिता को बनाया कातिल पेज – 10

4. सवाल : नहीं रहा विश्वास, भ्रष्ट तंत्र पर सवाल पेज – 11
5. सात जन्मों का बंधन आखिर क्यों कचहरी तक ? पेज – 16
6. प्रेरक कहानी : बल से भी बलवान है बुद्धि पेज – 19
7. कविता : विरासत है, झील की कदरदानी कर देना पेज – 20

8. मेवाड़ री चौपाल : कान्यो जीवतो पूरबज वेई ग्यो पेज – 21

9. कड़वा सच : पिद्दी का सोर 'बा' पेज – 23
9. संगीत चिकित्सा : संगीत का राग मिटाता है रोग पेज – 24
10. मासिक राशिफल : नवम्बर 2017 पेज – 25

कैलाश 8003255317

20 मिनीट में फ्रेश केक हाथों हाथ

प्रकाश 8982860236

राजसमन्द की पहली बेकरी

स्पेशिलस्ट फोटो केक

न्यू इन्दौर भेरूनाथ बेकर्स

बर्थ-डे केक, एनिवर्सरी केक, फोटो केक स्पेशिलस्ट

टी.वी.एस. चौराहा, कांकरोली, जिला-राजसमन्द (राज.)

44 साल बाद छलकी राजसमंद झील

कुदरत ने वैज्ञानिक व इंजीनियरों के कभी ओवरफ्लो नहीं होने के दावे को भी झूठला दिया

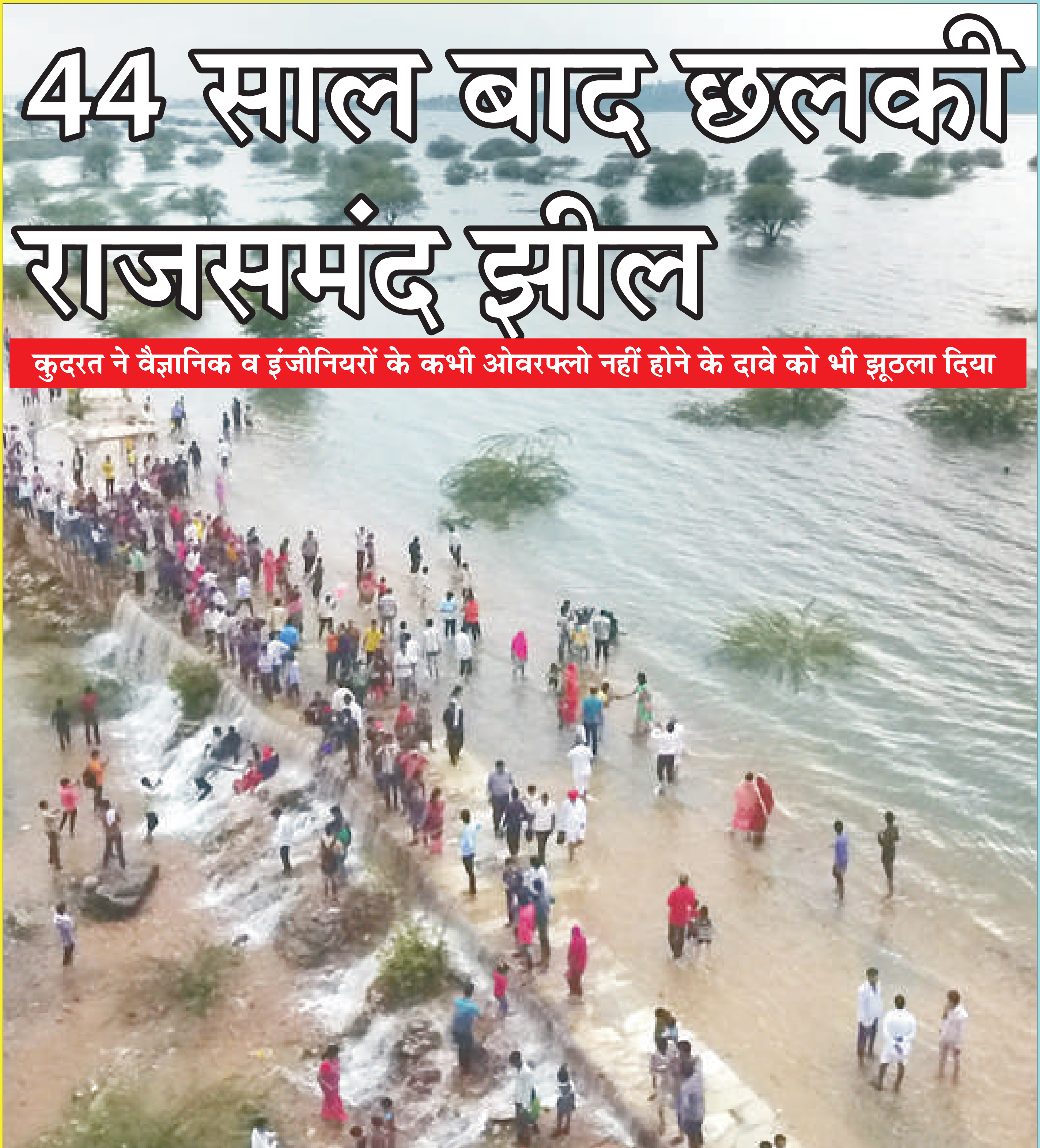

एशिया की मानवनिर्मित मीठे पानी की दूसरी सबसे बड़ी राजसमंद झील आखिर 44 साल बाद छलक गई, जो सत्रह साल पहले पूर्ण रूप से सूख गई थी। तभी वर्ष 2000 में मौसम वैज्ञानिक एवं इंजीनियरों के दल ने झील के कभी नहीं छलकने का दावा किया था, जिसे भी इस बार की बारिश ने झूठला दिया और झील छलकने से राजसमंदवासी खुशी से झूम उठे। झील का ओवरफ्लो देखने के लिए हजारों की तादाद में लोग पहुंचे और एक माह तक मेले सा माहौल रहा, जहां लोगों ने खूब सैर सपाटा किया।

इस बार 25 जुलाई को गोमती नदी पूरे वेग के साथ राजसमंद झील में समाहित हुई और रिकॉर्ड तोड़ सर्वाधिक 7 फीट तक पानी नदी में बहा। खारी फीडर भी करीब तीन माह तक अनवरत बही। एक ही दिन में झील का जल स्तर एक फीट बढ़ा, जो भी ऐतिहासिक रहा। वर्ष 1973 के बाद फिर से झील छलकने के मनमोहक नजारे, झरने में नहाने व मौज मस्ती के लिए राजसमंद शहर के साथ ही आस पास के

ग्रामीण क्षेत्र से भी हजारों की तादाद में लोग पहुंचे। लोगों की भीड़ इतनी बढ़ गई, जहां का यातायात बंद करने के साथ मेले सा माहौल बनने पर अतिरिक्त पुलिस जाब्ता तैनात करना पड़ा, जो करीब एक माह तक रहा।

झील संबंधी खास बातें

वर्ष 2006 की बारिश ने झील के बुरे दिनों को समाप्त करके झील का जल स्तर प्लस में ला दिया। इसके बाद जुलाई 2007 में भी गोमती से झील में पानी की आवक हुई, लेकिन 2008 से 2011 तक गोमती नदी से पानी नहीं आया।

2012 में फिर से गोमती नदी से आवक हुई। 2013 में नदी में पानी नहीं आया और वर्ष 2014 में ढाई दिन तक गोमती नदी में पानी झील में पहुंचा। कांकरोली की जनता को पीने का पानी, जेके फैक्ट्री को पानी, राजसमंद क्षेत्र के बीस किलोमीटर के एरिया में कृषि के लिए पानी की उपलब्धता रही है।

राजसमंद झील से दो राइट लेफ्ट केनाल भी बनी हुई है, जो हाईकोर्ट के आदेशानुसार पानी को रिजर्व रखते हुए सिंचाई के लिए नहर खोली जाती है। वहीं झील में सिंचाई उद्यान नौ चौकी पाल पर नगरपरिषद की ओर से फाउंटेन फ्लावर भी लगाया गया है।

झील भरने के लिए दो बड़े प्रयास

झील सूखने पर झील प्रशासन, स्वयंसेवी व व्यापारिक संगठनों ने मिल कर दो बड़े ऑपरेशन और 13 बार अभियान चलाकर गोमती नदी के बहाव क्षेत्र को बहाल किया।

वर्ष 2000 में 6 5 जगहों पर स्लरी, नाले ठीक किए, 29 पुलिया से मलबा निकाला। ऑपरेशन भागीरथ मिशन के तहत 20 हजार टन स्लरी छापर खेड़ी से काली मगरी के बीच से निकाली गई।

साल 2005 में अभियान के तहत आरवाड़ा, बामनटूकड़ा के बीच गोमती की सफाई आरवाड़ा से धांयला पुलिया तक चली। तब पांच हजार टन अपशिष्ट, स्लरी नदी पेटे से निकाली गई। साल 2004, 2005, 2006 में राजसमंद झील, नदी सफाई अभियान में जनता, प्रशासन, व्यापारियों, मार्बल उद्यमियों का सहयोग मिलता रहा। साल 2009, 2010, 2011, 2012 में फिर श्रमदान व सफाई हटाने के विशेष अभियान चले।

कई वर्ष सूखी रही झील

राजसमंद झील कई साल सूखी भी रही। वर्ष 1999 से 2005 तक लगातार झील का पैंदा उघड़ा रहा।

वर्ष 1973 के बाद 1994 में सर्वाधिक 28 .5 फीट पानी आया। तब झील छलकने से मात्र डेढ़ फीट खाली रह गई थी। वर्ष 1995-96 में भी झील में पानी की आवक बनी रही। 1997 से 1999 तक लगातार कम बारिश होने से झील का जल स्तर तेजी से गिरने लगा। वर्ष 1999 से पैंदा दिखने लग गया। यही हालात 2000, 2001, 2002, 2003, 2004 व 2005 तक बने रहे।

वर्ष 2006 की बारिश के बाद फिर से झील का जल स्तर प्लस आया। जुलाई 2007 में भी गोमती नदी से पानी झील तक पहुंचा। 2008 से 2011 तक नदी से पानी नहीं आया, लेकिन 2012 में फिर से गोमती नदी का पानी झील में समाहित हुआ। 2013 में नदी नहीं आई और वर्ष 2014 में ढाई दिन तक गोमती नदी का पानी झील तक पहुंचा। 2015 में 5 इंच पानी छापर खेड़ी पुलिया पर चला था।

राजसमंद झील छलकने के जश्न पर की गई लाइटिंग।

फिर नौकायन के प्रयास शुरू

राजसमंद झील की तरफ पर्यटकों को आकर्षित करने के लिहाज से नौका चलाने के लिए नगरपरिषद द्वारा प्रयास शुरू कर दिए। इसके लिए निविदा जारी कर दी और जल्द नांव का संचालन शुय होने की उम्मीद जगी है। नाथद्वारा व कुंभलगढ़ दुर्ग पर हजारों पर्यटक आते हैं, मगर राजसमंद झील तक नहीं पहुंच पाते हैं। नौकायन शुरू होने के बाद राजसमंद में भी पर्यटक बढ़ने की उम्मीद जगी है।

एक साल से बंद है नौकायन

राजसमंद झील में नगर परिषद की ओर से जनवरी 2015 में झील में नौकायन शुरू करने को लेकर निविदा निकाली थी। वहीं एमआरएस ग्रुप ने झील में नौकायन का संचालन किया, मगर लोगों का कम रूझान होने से नाव का संचालन मुश्किल हो गया और ठेकेदार कंपनी एमआरएस ग्रुप ने फिर से नाव संचालन नहीं किया।

झील को ओढ़ाई डेढ़ किमी की चुनर

उच्च शिक्षा मंत्री ने की राजसमंद से चारभुजा और कुंभलगढ़ विधायक अब करेंगे चारभुजा से राजसमंद की पदयात्रा

राजसमंद। ऐतिहासिक राजसमंद झील छलकने की मन्नत पूर्ण होने पर नगरपरिषद राजसमंद द्वारा राजसमंद झील को चुनर ओढ़ाई गई। इधर, उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी ने 6 अक्टूबर को भाजपा प्रदेशाध्यक्ष अशोक परनामी सहित दर्जनभर मंत्रियों की मौजूदगी में झील की विशेष पूजा अर्चना की। फिर कांकरोली में श्री द्वारकाधीश के दर्शन कर चारभुजा की पदयात्रा शुरू की, जो दो दिन में पूर्ण कर भगवान चारभुजानाथ के दर्शन किए। इसी मन्नत को लेकर कुंभलगढ़ विधायक सुरेन्द्रसिंह राठौड़ अब चारभुजा से राजसमंद की पदयात्रा शुरू करेंगे।

झील छलकने की खुशी पर 6 अक्टूबर सुबह साढ़े 11 बजे प्रभु श्री द्वारकाधीश के दर्शन कर उच्च शिक्षा मंत्री ने भाजपा प्रदेशाध्यक्ष परनामी, पंचायतराज मंत्री राजेंद्र राठौड़, कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी, सांसद हरिओमसिंह राठौड़ के आतिथ्य में प्रारंभ हुई। इससे पूर्व झील के जलघरा घाट पर पूजन कर डेढ़ किलोमीटर लम्बी चुंदड़ी ओढ़ाई। फिर दोपहर को श्री द्वारकाधीश व चारभुजानाथ के जयकारे लगाते हुए पदयात्रा पर रवाना हुई, जिनके साथ भाजपा कार्यकर्ताओं के अलावा कई शहरवासी भी साथ चल दिए। समाज, संगठनों के साथ ही आमजन ने पुष्प वर्षा कर अगवानी की। मुखर्जी चौराहा, जेके मोड़, चौपाटी, जलचक्की, राजनगर

होते हुए हाइवे से मोरचणा पहुंचे, जहां अल्प विराम करने के बाद केलवा पहुंचे। केलवा में क्षेत्र के लोगों ने अगवानी की और उनके साथ पदयात्रा पर निकले। सभी पदयात्रियों ने पड़ासली में रात्रि विश्राम किया, जहां ठहरने व भोजन का प्रबंध किया गया। उसके बाद 7 अक्टूबर अल सुबह उच्च शिक्षामंत्री के साथ पदयात्राउ रवाना हुए, जो दोपहर को गढबोर पहुंच गए और भगवान चारभुजानाथ के दर्शन किए।

झील पूजन में उमड़ी श्रद्धा

राजसमंद झील के जलघरा घाट पर झील का पूजन किया।

महोत्सव में उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी ने विधिविधान के साथ पं उमेश द्विवेदी के आचार्यत्व में 11 पंडितों के वैदिक मंत्रोच्चार से जल पूजन, झील में षोड़शोपचार से पूजन, दुग्धाभिषेक के साथ अनुष्ठान कराए। इसके बाद महानदियों के रूप में पूजित गोमती नदी की परंपरागत विधि विधान से पूजा-अर्चना कर 335 साड़ियों से बनी करीब पौने दो किलोमीटर लम्बी चुन्दड़ी ओढ़ाई। इस दौरान माहेश्वरी के साथ ही ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज मंत्री राजेन्द्र राठौड़, कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष अशोक परनामी, मगरा विकास बोर्ड के अध्यक्ष हरिसिंह रावत, सांसद हरिओमसिंह राठौड़, सभापति सुरेश पालीवाल ने महाआरती की। इस दौरान उदयपुर सांसद अर्जुनलाल मीणा, भरतपुर विधायक अनितासिंह गुर्जर, बांदीकुई विधायक अल्कासिंह, जायल विधायक मंजु बाघमार, सोजत विधायक संजना आगरी, पीलीबंगा विधायक द्रोपति मेघवाल सहित मेवाड़ अंचल के विधायक, जिला प्रमुख प्रवेशकुमार सालवी, उप जिला प्रमुख सफलता गुर्जर, उप सभापति अर्जुन मेवाड़ा, कलेक्टर पीसी बेरवाल, एडीएम बृजमोहन बैरवा, एएसपी हर्ष रत्नु, एसडीएम राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल, द्वारकाधीश मंदिर के युवराज वेदांतकुमार, युवराज नैमिषकुमार, भाजपा जिलाध्यक्ष भंवरलाल शर्मा, पूर्व मंत्री चुन्नीलाल गरासिया, मिराज ग्रुप के सीएमडी मदन पालीवाल, नगर परिषद आयुक्त बृजेश राय सहित जिले के प्रधान, शहरी एवं ग्रामीण जन प्रतिनिधि, अधिकारी, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के प्रमुख एवं बड़ी संख्या में आमजन मौजूद थे।

बेटी की चरित्रहीनता ने पिता को बनाया कातिल

Real Stories

लीला-छगन के बीच नजदीकियां बढ़ने के बाद अवैध संबंध भी बन गए और खुलेआम दोनों मौज-मस्ती करने लग गए थे। फिर अचानक क्या हुआ कि लीला को प्रेमी की हत्या करनी पड़ी।

9 सितंबर 2017 की शाम ठीक चार बजे कांकरोली थाने में टेलीफोन की घंटी बजी। मोही बीट कांस्टेबल विक्रमसिंह सोलंकी ने फोन उठाया, तो मोही में कपास के खेत में सड़ी गली लाश होने की सूचना मिली और हत्या की आशंका जताई। विक्रम ने तत्काल सीआई लक्ष्मणराम विश्नोई को घटना की जानकारी दी। इस पर उच्चाधिकारियों को सूचना देते हुए पुलिस जाब्ते के साथ सीआई विश्नोई जीप लेकर आधे घंटे में मोही पहुंच गए। मौका ए हालात देख हत्या के संदेह की सूचना पर पुलिस उप अधीक्षक राजेंद्रसिंह के बाद एएसपी हर्ष रतनू व एसपी मनोज कुमार चौधरी भी घटना स्थल पर पहुंच गए। बाद में शव की शिनाख्त तेलीखेड़ा, मोखुंदा (भीलवाड़ा) निवासी छगनलाल (30) पुत्र रतनलाल तेली के रूप में हुई, जिसकी चचेरी बहन खेत मालिक लक्ष्मीलाल के बेटे को ब्याही थी। वह बहन से मिलने के लिए अक्सर मोही आता रहता था। इसके बाद पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल रवाना कर क्षेत्र के लोगों से पूछताछ शुरू कर दी।

हत्या की जांच के लिए जिला पुलिस अधीक्षक ने सीआई लक्ष्मणराम विश्नोई के नेतृत्व में उप निरीक्षक मानसिंह चौहान, हैड कांस्टेबल गिरधारीसिंह, विक्रमसिंह, हकीम खां, हिम्मतसिंह, नीला की टीम गठित कर दी। पुलिस दल के प्रारंभिक पड़ताल में ही खेत मालिक मोही निवासी लक्ष्मीलाल तेली की बेटी लीला का चरित्र ठीक नहीं होने की बात सामने आई। कुछ देर बाद उसी लीला का मृतक छगनलाल तेली से नाता विवाह की चर्चा परिवार में चलने की बात सामने आ गई। इससे पुलिस का संदेह गहरा हो गया। साथ ही पुलिस के कई सवालों का पिता-पुत्री कोई स्पष्ट जवाब नहीं दे पाए। बाद में जब पुलिस ने उनसे सख्ती से पूछताछ की, तो दोनों ने हत्या करना कबूल कर लिया। पुलिस ने पिता लक्ष्मीलाल तेली व उसकी बेटी लीला को गिरफ्तार कर लिया।

युवक की हत्या पर गिरफ्तार पिता पुत्री

फिर आरोपियों ने हत्या के पीछे की जो कहानी सुनाई है, वह इस प्रकार है–

मोही निवासी लीला की पहले 16 वर्ष की उम्र में शादी हो गई। फिर पारिवारिक अर्न्तकलह के चलते सामाजिक स्तर पर ही अटूट बंधन टूट गया। दोबारा बाली उम्र में ही लीला का नाता विवाह करवाया, मगर वहां भी उसके पति व परिवार से नहीं बन पाई। इसी वजह से लीला कई महीनों से पीहर मोही में पिता के साथ रह रही थी। मोही में उसकी भाभी देऊ से मिलने के लिए अक्सर उसका भाई तेलीखेड़ा, मोखुंदा (भीलवाड़ा) निवासी मुकेश और उसके साथ छगनलाल तेली भी आता था। छगन जब पहली बार मोही आया तो लीला को देखते ही दिल दे बैठा। फिर दोनों एक दूजे को चाहत भरी नजरों से देखने लगे। उसके बाद एक दिन छगन ने अकेली देख लीला को बोल ही दिया क्या मुझसे शादी करोगी ?

इस पर रौबीले अंदाज में लीला बोली– क्या क्या ?

घबराया छगन धीरे से बोला– मैं भी अकेला हूं और तुम भी। इसलिए अगर तुम चाहो तो...।

कुछ देर चुप रहने के बाद लीला मुस्कुरा कर चल दी। फिर छगन भी अपने घर चला गया। इस तरह दोनों के बीच नजदीकियां बढ़ गई और मौका पाकर अब चचेरी बहन देऊ से मिलने के बहाने मोही आ जाता व प्रेमिका लीला से जी भर बातें करता।

बातों ही बातों में दोनों वासना के तालाब में इस तरह डूबने लग गए कि न उन्हें घर परिवार की चिंता रह गई और न ही इज्जत की परवाह। अब छगन का जब भी मन करता, तब मोखुंदा से मोही आ जाता और घर या खेत पर वासना की भूख मिटाता। छगन की आवाजाही बढ़ने से गली-मोहल्ले व गांव के लोगों में छगन व लीला के बीच चल रहे अफेयर की चर्चा होने लगी और बात लीला के पिता लक्ष्मीलाल तक पहुंच गई।

विवाद बढ़ता देख प्रेमी छगन ने अपने परिजनों के माध्यम से प्रेमिका लीला के पिता लक्ष्मीलाल से नाता विवाह का प्रस्ताव रखा। इस तरह छगन व लीला के नाता विवाह की चर्चा को लेकर कुछ झगड़े की राशि पर भी विचार विमर्श हुआ। झगड़ा (तय राशि) चुकाने के लिए छगन ने पैसों का इंतजाम करने के प्रयास शुरू कर दिए, मगर लक्ष्मीलाल ने नाता होने तक दोनों के मेल मिलाप पर प्रतिबंध लगा दिया।

इस सख्ती से एक बारगी छगन व लीला की मेल-मुलाकातें बंद सी हो गई, लेकिन वह लीला की प्यार भरी बातों व रोमांटिक अदा से छगन को आकर्षित करती रही। इस कारण एक दूजे से मिलने की उत्तेजना व उत्सुकता कम नहीं हो सकी और ज्यादा दिन तक एक दूजे के बिना नहीं रह सके।

युवक की हत्या के बाद कपास के खेत में घटना स्थल का जायजा लेते पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार चौधरी व अन्य अधिकारी।

कुछ दिन छगन मोबाइल पर रसीली बातों से संतोष रखने का प्रयास किया, मगर जवां उम्र में हवस की भूख को नियंत्रित नहीं कर पाए। इस बीच 7 सितंबर 2017 को लीला ठीक 18 वर्ष की हो गई। उसके अगले दिन 8 सितंबर को तेलीखेड़ा में किसी की मृत्यु होने से मोही से लक्ष्मीलाल तेलीखेड़ा गया। प्रेमिका के पिता लक्ष्मीलाल को तेलीखेड़ा में देख छगन के हवस की उत्तेजना तेज हो गई और आमेट बैंक से पैसे लाने का बहाना बना छगन बाइक स्टार्ट कर सीधे मोही पहुंच गया।

मोही पहुंच छगन ने प्रेमिका लीला को उसके खेत पर बुला लिया। कई दिनों बाद एक दूजे को देखते ही छगन ने लीला को बाहों में भर लिया। लंबे समय की मुलाकात से दोनों रोमांस में ऐसे मदमस्त हो गए कि कब उनके तन से कपड़े उतर गए, उन्हें पता ही नहीं चला।

तभी पड़ोसियों की सूचना पर लक्ष्मीलाल तेलीखेड़ा से तत्काल मोही घर पहुंचा, तो बेटी लीला के नहीं होने से वह सीधे खेत पर चला गया। खेत पर बेटी लीला के साथ रंगरेलियां मनाते छगन को देख लक्ष्मीलाल आग बबूला हो गया। इस पर लीला व छगन घबराते हुए कांप खड़े हुए। अगले ही पल छगन ने रौबीली आवाज में बोल दिया मैं इसे मेरे साथ ले जा रहा हूं।

आवेश में लक्ष्मीलाल बोला– क्यों मेरी इज्जत को धूल में मिला रहे हो। यह कहते हुए छगन को धक्का देकर नीचे गिरा दिया और घुटने के बल छाती पर बैठ कर गला दबा दिया। गले की हड्डी टूटने से कुछ ही पल में छगन ने दम तोड़ दिया। पुलिस ने वारदात को लेखबद्ध करने के बाद कांकरोली थाना पुलिस ने हत्या में प्रयुक्त गमछा भी बरामद कर लिया। दोनों को न्यायालय में पेश किया, जहां से न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया।

किशनसिंह पंवार
मो. 80031-15914
90014-25915
97834-53616
किशनसिंह
श्रीमती गीतादेवी-वार्डपंच सापोल
ग्राम पंचायत, सांगठ कला
श्री क्षैत्रपाल कलेक्शन एवं जनरल स्टोर
कॉस्मेटिक आईटम, जुते, चप्पल, रेडिमेड कपड़े, कॉल्ड्रींक्स, नये मोबाइल, एसेसरीज व किराणा के विक्रेता
श्री क्षैत्रपाल कृषि फार्म
हमारे यहां रेती, पत्थर, सीमेंट, गिट्टी, ईटें, पानी की सप्लाई व खेत हकाई हेतु सम्पर्क करें।
अधिकृत विक्रेता : अल्ट्राटेक सीमेन्ट
गांव सापोल, सांगठ कला, जिला-राजसमन्द

प्रिटिंग के क्षेत्र में वर्षो पुराना जाना-पहचाना विश्वसनीय नाम
अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित
सभी प्रकार की ऑफसेट प्रिटिंग, मल्टीकलर शादी कार्ड, विजिटिंग कार्ड सभी प्रकार की प्रिटिंग, रबर की मोहरें कम्प्यूटर जॉब, डिजाइनिंग, लेमिनेशन, स्पॉइल बाइंडिंग के लिए
ऑफसेट यूनिट
रमेश आचार्य 9414171545
आचार्य प्रिन्टर्स
जे-11 हस्तिनापुर, कांकरोली जिला राजसमन्द फोन नं. 02952-231545

आचार्य पब्लिसिटी
राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, माटी या मेवाड़ री, जस्ट राजसमंद के अलावा समस्त राज्य व राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञापन देने की सुविधा उपलब्ध।
रमेश आचार्य 9414171545

आचार्य ई-मित्र
स्केन, मूल निवास, जाति, आय, जन्म, बिजली बिल, पेन कार्ड, अल्पसंख्यक प्रमाण पत्र, सभी प्रकार के ऑनलाइन फॉर्म व टोकन काटने की सुविधा उपलब्ध।
आत्मदीप आचार्य - 7014307942, 9461956731

बढ़ते भ्रष्टाचार के लिए आखिर कौन जिम्मेदार?

खुद के फायदे के लिए अन्य पर अनैतिक दबाव या लेन-देन ही भ्रष्टाचार है। आखिर इसके लिए जि मेदार कौन है- राजनेता, अफसर, कार्मिक, न्यायपालिका में बैठे लोग अथवा और कोई। वे भी तो हमारे ही समाज, परिवार का हिस्सा है। ज्यादातर लोग मानते हैं कि नेता भ्रष्ट है, लेकिन जरा अपने गिरेबान में झांक देखिए कि खुद अपने शहर व गांव में ईमानदार जनप्रतिनिधि चुनने के लिए क्या प्रयास किए। क्या खुद भ्रष्टाचार के दायरे में नहीं आए और नहीं, तो क्या आपने तुरंत व जल्द कार्य के लिए किसी व्यक्ति से अनैतिक मदद नहीं ली।

क्या हर श स की जि मेदार नहीं है कि वे ईमानदार जनप्रतिनिधि चुने ? दोहरी नीति में क्या स्वीकारना उचित होगा कि हम सब लोग भ्रष्ट है और भ्रष्टाचार के लिए जि मेदार है। यह बात कड़वी है, लेकिन सच्चाई से नजरअंदाज भी नहीं की जा सकती। गांव-ढाणी के छोटे मोटे जनप्रतिनिधियों से देश के राजनेता भी इस भ्रष्ट आचरण के मेल से अछूते नहीं रहे। फिल्मी जगत में भी निजी फायदे के लिए अश्लीलता का माहौल है। क्या इसे भ्रष्ट आचरण के दायरे में नहीं माना जाएगा। आजकल की फिल्मों में अश्लीलता पेश कर क्या समाज व संस्कृति को भ्रष्ट नहीं किया जा रहा। मीडिया जगत में भी एडजस्टमेंट की गतिविधि किसी से छिपी नहीं है, तो न्यायपालिका में भी गत वर्षों में भर्ती प्रक्रिया और अन्य मुद्दों को लेकर स्वच्छ छवि पर सवाल खड़े हुए हैं। साहित्य जगत में भी जेक जरिया चलने लगा है, जिससे अपेक्षाकृत कम प्रतिभावान लेखक भी स मानित हो रहे हैं। आखिर भ्रष्टाचार का मूल कारण लोगों का स्वार्थ और ओछी मानसिकता ही सामने आई है।

भरोसा टूटा, नहीं रहा विश्वास

समाज में अनैतिकता, अहिंसा, ईमानदारी, मानवता व स्वार्थ का बोलबाला बढ़ने से शासन और प्रशासन भ्रष्टाचार की गिर त में आ गया। ऐसे में आमजन का शासन से भरोसा ही टूट चुका है और अब हालात ऐसे होने लगे है कि किसी भी महकमे में कार्मिक या दलाल को हाथखर्ची नहीं दी, तो उसका कार्य होना मुश्किल है।

राजस्थान में भ्रष्टाचार संस्थागत हो गया : गहलोत

Ashok Gehlot
@ashokgehlot51

Vasundhara govt promised to root out the corruption. But now it is not only deep rooted but institutionalized too.#corrupcion #rajasthan

10:10 AM - Jul 22, 2016

19 147 181

राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रदेश की वसुंधरा राजे सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि राज्य में भ्रष्टाचार अब संस्थागत हो गया है। गहलोत ने ट्वीट कर आरोप लगाया कि वसुंधरा सरकार ने भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करने का वादा किया था, लेकिन अब न केवल भ्रष्टाचार जड़ों में पहुंच गया है, बल्कि संस्थागत भी हो गया है।

अशोक गहलोत

दस माह में 59 अफसर-बाबू रिश्वत लेते पकड़े

अब सरकारी महकमे में किसी कार्य के लिए आमजन से रिश्वत लेकर ही कार्य करना तो अब परंपरा बन गई है। राजसमंद जिले में ही भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो द्वारा जनवरी से अक्टूबर 2017 तक दस माह में एसीबी ने ट्रेप कर 11 लोगों को रिश्वत लेते व दिलाते पकड़ा, जबकि पद के दुरुपयोग व अन्य मामलों को लेकर एसीबी ने 59 बाबू, शिक्षक, पटवारी, कांस्टेबल व अफसर के खिलाफ कार्रवाई की। राजसमंद में वर्ष 2016 के मुकाबले 2017 में दोगुने ज्यादा कार्मिक- अफसर रिश्वत लेते या पद का दुरुपयोग करते पकड़े गए।

जब पारदर्शिता होगी, तब भ्रष्टाचार से मुक्ति

लोकतंत्र में जब तक हर कार्य पारदर्शी नहीं होंगे, तब तक भ्रष्टाचार से राहत नहीं मिल पाएगी। हर कार्य की हर स्तर तक की सूचना ऑनलाइन वेबसाइट या मोबाइल पर अपडेट होनी चाहिए। इसी तरह सरकार से खर्च होने वाली हर राशि का भी पूर्ण ब्यौरा सार्वजनिक किया जाए, जिससे स्वत: ही भ्रष्टाचार पर अंकुश लग सकता है। जब पैसा जनता का है, तो जनता को सबकुछ पता होनी चाहिए। इसके लिए सूचना का अधिकार अधिनियम से सूचना मांगने की भी जरूरत नहीं पड़े।

अभियोजन मंजूरी में टालमटोल

भ्रष्टाचार के मामले में गिर तार अफसरों व कार्मिकों के खिलाफ कार्रवाई के लिए भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो द्वारा अभियोजन स्वीकृति संबंधित विभागाध्यक्ष से मांगी जाती है, मगर कई मामलों में अभियोजन स्वीकृति नहीं मिलने से भ्रष्ट अफसरों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हो पा रही है। वर्ष 2016 में अभियोजन स्वीकृति के लिए 288 अभियोग भेजे और वर्ष प्रारंभ तक 216 लंबित थे। वर्ष के अंत तक रा%य सरकार से 38 0 प्रकरणों में अभियोजन स्वीकृति मिली और 124 प्रकरण अटके ही रहे। सरकार द्वारा समय पर अभियोजन स्वीकृति नहीं देने से कई भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं हो पा रही है।

आंकड़ों की भ्रष्टाचार की हकीकत

कार्रवाई	2014	2015	2016
वर्षभर में ट्रेप	267	246	290
पद दुरुपयोग	209	136	78

राजसमंद में भ्रष्टाचार की स्थिति

वर्ष 2016 : रिश्वत लेते रंगे हाथ पकड़ने व पद दुरुपयोग के 12 प्रकरण दर्ज हुए, जिसमें 30 अफसर, कार्मिक व जनप्रतिनिधि शामिल थे।

वर्ष 2017 : रिश्वत लेते रंगे हाथ पकड़ने और पद दुरुपयोग कर राजकोष को हानि पहुंचाने के अक्टूबर 2017 तक दस माह में 12 प्रकरण दर्ज हुआ, जिसमें 59 कार्मिक, अधिकारी व जनप्रतिनिधि शामिल है।

श्रीजी होम्यो क्लीनिक स्थान परिवर्तन : अब नए परिसर में
डॉ. प्रकाश शर्मा
BHMS
Mob. 9928211101, 8003859485
E mail : drprakaashsharma@gmail.com
शिवालय नगर, स्वास्तिक सिनेमा के पास,
50 फीट रोड तिराहे के पास, स्टेशन रोड, कांकरोली
समय :- प्रातः 9.30 से 2.30 बजे एवं सायं 4.00 बजे से 7 बजे तक
विशेष :-
- माईग्रेन (सिरदर्द)
- डिप्रेशन
- एलर्जिक खांसी, जुकाम व दमा
- टोन्सिल बढ़ना
- टाईफाईड
- महिलाओं में मासिक कम या ज्यादा आना
- सफेद पानी आना व बार-बार गर्भपात होना।
- Cerebral Palsy बच्चों का समय पर शारीरिक व मानसिक विकास नहीं होना जैसे लार गिरना, गर्दन नहीं उठा पाना, चल व बोल नहीं पाना
- फोड़े फुन्सी एवं पुरानी चोट
- पोईल्स बिना ऑपरेशन हटाने की सुविधा।
- पुरूषों में शुक्राणुओं की कमी एवं कमजोरी।

रिश्वत लेते कांस्टेबल और वरिष्ठ लिपिक रंगे हाथ पकड़े, तो उठे कई सवाल ?

कांस्टेबल पकड़ा तो खुली थाने की सांठगांठ और लिपिक की गिरफ्तार से अस्पतालों की सच्चाई भी आई सामने

राजसमंद. कांकरोली थाने में दर्ज परिवाद को रफा दफा करने की एवज में 15 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए 17 अक्टूबर को भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की टीम ने कांकरोली थाने के कांस्टेबल धर्मेंद्रसिंह को 15 हजार रुपए की रिश्वत लेते रंगे हाथ गिर तार कर लिया। एसीबी की इस कार्रवाई से थानों में दर्ज होने वाले मुकदमों को लेकर पुलिस, फरियादी व आरोपित के बीच होने वाले लेन-देन व सांठगांठ भी आम हो गई।

एसीबी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजेश चौधरी ने बताया कि आरोपी धर्मेन्द्र सिंह पुत्र जगमाल सिंह यादव निवासी भुनगड़ा थाना शहाजपुर जिला अलवर हाल कांकरोली ने राधावल्लभ कुमावत के विरुद्ध कांकरोली थाने में दर्ज परिवाद को रफादफा करने की एवज में 15 हजार राशि रिश्वत के रूप में मांगे। इसकी शिकायत राधावल्लभ ने एसीबी में की। एसीबी के सत्यापन के दौरान 5 हजार ले लिए और दस हजार रुपए बाद में सौ फीट रोड पर एप्पल शॉप पर देना तय हुआ। बाद में एसीबी ने तय जगह पर रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ गिर तार कर लिया।

बाबू ने कम्पाउंडर से मांगी रिश्वत

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र रेलमगरा के वरिष्ठ लिपिक ने उसी अस्पताल में कार्यरत कम्पाउंडर से सातवें वेतनमान का फिक्सेशन करने की एवज में रिश्वत मांगी। एक हजार रुपए लेते हुए एसीबी ने 7 नवंबर को रंगे हाथ गिर तार कर लिया।

एसीबी की गिरफ्त में गोले में कांस्टेबल व इनसेट में लिपिक

एसीबी एएसपी राजेश चौधरी ने बताया कि रेलमगरा अस्पताल के तकनीशियन हीरालाल कुमावत ने 3 नवंबर को शिकायत दर्ज कराई कि लिपिक भीलवाड़ा रोड कांकरोली निवासी फेबी जैकब एक हजार रुपए रिश्वत मांग रहा है। सत्यापन के बाद फिर रेलमगरा अस्पताल में एक हजार रुपए दिए, तभी एसीबी दल ने दबिश देकर लिपिक को गिर तार कर लिया। इससे यह भी स्पष्ट हो गया कि एक ही विभाग में कार्यरत कार्मिकों में रिश्वत लेन-देन की प्रवृत्ति है। इससे मित्रता, नैतिकता व मानवीय मूल्य भी तार तार हो गए और कार्मिकों में व्याप्त हालात भी सामने आ गए।

क्या इन्होंने पहली बार ली रिश्वत, अब तक कोई क्यों नहीं बोला ?

सवाल है कि क्या कांस्टेबल व वरिष्ठ लिपिक ने पहली बार रिश्वत ली। अगर पहले भी रिश्वत ली, तो देने वाले कार्मिक या आम जनता क्यों नहीं बोली। अब तक आम लोग क्यों उसे रिश्वत देते रहे। क्या उसमें कहीं न कहीं उनका भी व्यक्तिगत स्वार्थ था? दोनों ही रिश्वत प्रकरणों के बाद सवाल यह भी है कि क्या उन द तरों में दोनों कार्मिक ही भ्रष्ट थे। अब उस महकमे या द तर में कोई कार्मिक रिश्वत नहीं लेता। क्या अब उन जगह कोई रिश्वत का लेन-देन नहीं होगा। इन सारे सवालों को लेकर न सिर्फ कार्मिक, बल्कि अधिकारी, जनप्रतिनिधि और आमजन भी कठघरे में है।

रिश्वत देने वाले पर कार्रवाई क्यों नहीं ?

यह सही बात हो सकती है कि जनता अपने फायदे के लिए सरकारी द तरों में कार्मिक व अफसरों को रिश्वत देते हैं। अब सवाल यह है कि अब तक ऐसे जबरन रिश्वत देने वाले कतिपय व्यक्ति के खिलाफ भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो में किसी कार्मिक या अफसर ने रिपोर्ट क्यों नहीं दी।

ताकि कोई नहीं बोल सके कि वह 'भ्रष्ट'

क्या चाहती है राजस्थान सरकार

राजस्थान सरकार ने अध्यादेश जारी किया है कि किसी भी जज, मजिस्ट्रेट या लोकसेवक के खिलाफ सरकार से मंजूरी लिए बिना किसी तरह की जांच नहीं की जाएगी। कोई भी लोकसेवक अपनी ड्यूटी के दौरान लिए गए निर्णय पर जांच के दायरे में नहीं आ सकता है, सिवाय कोड ऑफ क्रिमिनल प्रोसिजर 197 के। साथ ही किसी भी लोकसेवक के खिलाफ एफआईआर पुलिस थाने में दर्ज नहीं हो सकती। जज भी लोकसेवक के खिलाफ एफआईआर का आदेश नहीं दे सकता। अध्यादेश के मुताबिक सरकार स्तर पर सक्षम अधिकारी को 18 0 दिन के अंदर जांच की इजाजत देनी होगी। अगर 18 0 दिन के अंदर जांच की इजाजत नहीं दी जाती है तो इसे स्वीकृत मान लिया जाएगा। अध्यादेश में यह भी कहा गया है कि किसी भी जज, मजिस्ट्रेट या लोकसेवक का नाम व पहचान मीडिया तब तक प्रकाशित नहीं होगी, जब तक सरकार के सक्षम अधिकारी इसकी इजाजत नहीं दें। क्रिमिनल लॉ राजस्थान अमेंडमेंट ऑर्डिनेंस 2017 में साफतौर पर मीडिया को लिखने पर रोक लगाई गई है।

जनता के मुंह और मीडिया की लेखनी पर ताला

सामाजिक कार्यकर्ता एसएल भाटी का कहना है कि ये राज्य में काला कानून है। इसकी आड़ में भ्रष्टाचार ज्यादा होगा और कोई व्यक्ति या जनता तो क्या मीडिया भी देख कर भी कुछ नहीं कर पाएंगे। यह काला कानून तो जनता के मुंह और मीडिया की लेखनी पर ताला लगाने के समान है।

यह बोले गृहमंत्री

मीडिया से रूबरू होकर गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया बोले थे कि ईमानदार अधिकारी को बचाने के लिए सरकार यह अध्यादेश लाई है। कोई भी ईमानदार अधिकारी काम करने में डरता था कि कोई जानबूझकर झूठी शिकायत कर उसे फंसा न दे।

तीखी मिर्ची

काले को काला कहने का जमाना नहीं रहा

विजय शर्मा @ राजसमंद

सुबह शाम हल्की गुनगुनी ठंड क्या हुई। हमारी गली के कुछ मनचलों ने तो अभी से अलाव जलाना शुरू कर दिया। गली के कुछ ठाले, कुछ रायचंद तो कुछ मसखरे चौराहे पर इसी बहाने इकट्ठे हो जाते हैं। कल जब शाम मैं घर जा रहा था, तो मुझे भी एक रायचंद ने जबरदस्ती रोक लिया। जब अलाव के पास पहुंचा तो मैंने देखा सक्सेनाजी के मुंह पर तो अलाव के पास फूंक देने के कारण नाक काली हो गई। तभी जोशीजी ने कहा सक्सेनाजी आपकी तो नाक काली हो गई। यह सुनकर सक्सेनाजी तो आग बबूला हो गए। बोले कि क्यों मुझे खाम खां बदनाम करते हो। मैंने ऐसा कोई काम ही नहीं किया, जिससे मेरा मुंह काला हो जाए। बातों ही बातों में दोनों अपनी बात पर अड़ गए। इस दौरान सक्सेनाजी ने अपनी नाक कपड़े से साफ कर दी। अब सक्सेनाजी तो जोशीजी पर हावी हो गए और कहा कि अब तू सिद्ध करके बता कि मेरी नाक काली थी।

मैंने हालात को संभालते हुए कहा कि जोशीजी होश संभाल कर बात करा करो। जमाना बदल गया है। देखते नहीं, राजस्थान सरकार अब अध्यादेश ला रही है, जिसके तहत जब तक पुलिस थाने में एफआईआर दर्ज नहीं हो जाए, तब तक किसी भी कालिख लगे आदमी को काला नहीं कह सकते हैं। आपकी यह सच्चाई कभी मुसीबत बन जाएगी।

अब जोशीजी तो सक्सेनाजी के सामने हाथ जोड़ कर खड़े हो गए। साथ ही बोले माफ कर दो भैयाजी। हमसे गलती हो गई है। हमें पता नहीं कि अब काले को काला कहने का जमाना नहीं रहा।

सात जन्मों का बंधन

आखिर क्यों कचहरी तक?

सात जन्मों के इन रिश्तों में आखिर यह कड़वाहट क्यों ?
क्यों रिश्तों में दूरिया बढ़ती जा रही है ?
आखिर क्यों थानों और कचहरी तक जाने की नौबत आ पढ़ती हैं।
जन्म-जन्म का साथ निभाने वाले जोड़े क्यों चंद महीनों का भी साथ नहीं निभा पा रहे ? जानिए जयवर्द्धन पत्रिका की एक विशेष रिपोर्ट....

पति-पत्नी का रिश्ता त्याग,प्रेम और विश्वास का होता है। शादीशुदा जीवन का रिश्ता एक अटूट बन्धन होता है, लेकिन वर्तमान के विवाहेत्तर संबंधो में आए दिन कलहबाजी या झगडे फसाद के बारे में आपने सुना होगा, आखिर ऐसो क्यों है, कि अपने साथ सात फेरे लेने वाला साथी के साथ सात जन्मों का साथ देने के बदले सात महीने में ही रिश्तों में दरार आ जाती है। माना जाता है कि पति-पत्नी परिवार की गाडी के दो पहिए है, यदि एक भी पहिया खराब या बिगड जाए तो जिंदगी रूपी इस गाडी का चलना मुश्किल हो जाता है। विवाह बन्धन कोई खेल नही होता है। यह रिश्ता कुछ समझौते और बलिदान मांगता है , जिसके बदले में आपको प्यार करने वाला मिलता है। लेकिन जब छोटी-छोटी बातों पर अंर्तकलह करते है तो यह कलह पूरे घर को बर्बाद कर देती है। छोटा क्लैश घर से निकल कर जब थाने या कचहरी तक पहुंचता है तो आपको ये छोटा कलह आर्थिक व मानसिक रूप से परेशान तो करता ही है वरन इसका असर अपने आने वाली पीढी पर भी पढता है। इस लडाई में घर का तीसरा सदस्य यानि उनकी संतान मानसिक रूप से प्रताडित होती है। आखिर इन छोटी-छोटी वजहों से जीवन भर के रिश्तों में क्यों दरार आ जाती है। क्यों हो जाते है इन छोटी-छोटी बातों से पति-पत्नी के बीच मन-मुटाव ? क्या इन्हे रोका या संभाला नही जा सकता। लोकल स्तर से लेकर बडे कोर्ट या फैमेली कोर्ट में ऐसे लाखो केस चल रहे है। तो क्या इन लोगों के रिश्तों में कलह या झगडे का कोई एक कारण तो नही हो सकता है, आखिर क्या वे कारण है, जो हंसते -खेलते परिवार को गर्त की ओर ले जाते है।

बच्चों पर तलाक का असर

वैवाहिक जीवन में जब दंपती के बीच अधिक घरेलू कलह बढ जाता है तो बात तलाक तक पहुंच जाती है। तलाक का असर हालांकि दोनों दंपतियों पर जरूर पडता है लेकिन यह असर अधिक पीडादायक तब बनता जब दंपती की कोई संतान हो। तलाक के बाद अधिकांश समय बच्चा या तो माता के साथ रहता या फिर पिता के पास। उसका एक नया घर होता, उसकी नई स्कूल और नये साथी होते है, मगर उसकी पीडा कोई समझ नही पाता कि वो दोनों को साथ देखना चाहता है। नाजुक मन के बच्चे पर तलाक का बुरा प्रभाव पडता है। लडकों में विद्रोही और आक्रमक व्यवहार उत्पन्न हो जाते है वही लडकिया चिंतित व चुप रहती है। तलाक का प्रभाव बच्चों में कई नकारात्मक प्रवृत्तियो को जन्म देता है जैसे कडवाहट, भावनात्मक दर्द, चिंता, भय आदि। यह कहना गलत नही होगा कि इससे बच्चा माता-पिता के प्यार के बिना कई गलत प्रवृत्तियों के बीच फंस जाता है। दोनों के कलह के बीच बालमन किस तरह तडफता है ,उसकी व्यथा का दुख कोई समझ नही पाता। उसकी सोच में या हमेशा सपनों की दुनिया में वो माता-पिता दोनों को एक साथ देखना चाहता है, मगर यथार्थ कुछ और ही होता है। इसलिए पति-पत्नी को प्रयास यही करना चाहिए कि जहां तक हो कलह को टाले, तथा आपसी समझ से समस्या का हल ढूंढे। तभी आपका वैवाहिक जीवन संतान सहित खुशनुमा होगा, हसीन होगा।

क्या है झगड़े के कारण

अहंकार या इगो :

पति-पत्नी के जीवन में कलह की समस्या की शुरूआत अहम (इगो) से होती है। छोटी-छोटी बात और जरूरत पूरी न होने पर एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो जाता है। जो क्लैश का कारण बनता है।

घर की जिम्मेदारी महिला पर होने पर :

यदि परिवार की जिम्मेदारी महिला जीवन साथी के ऊपर निर्भर होती है तो इसमें अहम (इगो) कलह का कारण बनता है। पुरूष साथी अपने साथी के सामने अपने आप को निम्न समझता है वही काम की वजह से परिवार को पूरा समय न दे पाने के चलते पती-पत्नी में कहासुनी होती है।

वित्तीय संकट फाइनेंसियल क्राइसिस):

झगडे की सबसे मुख्य और ठोस वजह है रूपये। खासतौर पर उन परिवार में इससे ज्यादा समस्या बढ जाती है, जिनकी आमदनी अट्ठनी और खर्चा रूपया होता है।

जरूरत से ज्यादा की चाहत :

जरूरत से ज्यादा और समय से पहले की चाहत भी फैमेली कलह का एक बडा कारण होता है। जैसे परिवार के एक किसी एक व्यक्ति (पर्सन)की डिमांड जरूरत से ज्यादा बढ जाती है।

अलग रहने की चाहत :

अलग और अकेले रहने की चाहत में भी फैमिली की शांती भंग हो जाती है। काउंसिलिंग सेल में कई ऐसे केस आते है जिनमे लडकी ससुराल में रहने की जगह पति के साथ अलग से रहना चाहती है, जिसे लेकर दोनों के बीच कहासुनी शुरू होती है और बात बिगडकर झगडे तक पहुंच जाती है।

ससुराल और मायके का दखल :

मैरिज कपल के बीच ससुराल और मायके पक्ष का इंटरफेयर बढने पर दोनों परिवार के लोग अपनी सोच और प्रथा एक दूसरे पर थोपते है।

पुराने रिवाज और आदर्श (आइडियल) बहु :

आज समय में पुराने रिवाज और आइडियल बहु की सोच के चलते रिश्ते ज्यादा बिगड रहे है। दूसरे कल्चर में जाकर शादी करने के बाद अपने कल्चर को मनवाना और आदर्श बहु की सोच पूरी न होने से भी परिवार में विवाद शुरू हो जाता है।

घर में शराब या मादक पदार्थों का इस्तेमाल :

अक्सर लडाई की जड शराब या नशाखोरी होती है। जिससे घर का माहौल तनावपूर्ण होता है। मादकता के चलते घर में लडाई-झगडों की फेहरिस्त बढ जाती है और मामला कोर्ट तक पहुंच जाता है।

अवैध संबंध का होना :

पती-पत्नी का शिता प्यार का रिश्ता होता है, एक विश्वास का रिश्ता होता है। यदि यह विश्वास टूट जाए तो संभव है कि रिश्ता भी टूट सकता है। घर कलह की एक ओर मुख्य वजह होती है अवैध सम्बंध। शादी से पूर्व के प्रेमी- प्रेमिका से अपने संम्बंध जारी रखना , शादीशुदा जीवन के लिए खतरा होता है। वही शादीशुदा होते हुए भी विपरित लिंग से अवैध संबंध रखना, कोर्ट या कचहरी जाने के लिए काफी है।

कैसे हो समाधान :

पारिवारिक विवाद के मामले साल दर साल बढते ही जा रहे है। कचहरी में ऐसे केसो की संख्या भी बढ रही है। इनमें शहर और गांवो में अलग-अलग तरीके के मामले होते है। इसलिए इसका हल निकालने के लिए अपनी अंडर स्टेडिंग को एकरूपता में लाना होगा। घर में किसी भी मादक पदार्थ का इस्तेमाल कम या बंद ही कर देना चाहिए। अपनी अपेक्षाओं को कम कर दिया जाए, और दोनों पक्षों की सोच को एक दूसरे से मिलाया जाए तो झगडे कम होंगे।

बल से भी बलवान है बुद्धि

एक बार रामनगर में एकाएक चोरियों की वारदातें काफी बढ़ गई। चौतरफा लोगों में डर व दहशत व्याप्त हो गई। जनता से लेकर राजा तक को यही चिंता सताने लगी कि आखिर कौन है ऐसा चोर, जिसने सबकी नाक में दम कर रखा है। इस पर राजा ने गली, मोहल्ले के चप्पे- चप्पे पर सैनिक तैनात कर दिए। फिर भी चोरियां नहीं थमी और चिंता बढ़ने पर राजा ने तेलानीराम को बुलाया और कहा।

तेनालीराम, तुम्हें तो पता ही होगा कि अपने राज्य में बहुत चोरियां हो रही है। तुम जितने चाहो उतने सैनिक ले जाओ, लेकिन इन चोरों को पकड़ कर राजदरबार में ले आओ।

तेनालीराम ने कहा- महाराज आप चिंता न करें। मैं चोरों को अकेले ही पकड़ ले आऊंगा।

इतना कहकर तेनालीराम राजदरबार से निकला और कुछ सोच कर अपने राज्य में यह बात फैला दी कि उनको एक ऐसा मंत्र मिला है, जिसको पढ़ने के कारण उनके घर पर चोरी नहीं कर सकता।

लोगो में यह बात आग की तरह फैल गई और उन्हीं लोगों में वे दो चोर भी थे, जो चोरी किया करते थे। तेनालीराम की इस मंत्र वाली बात को सुनकर दोनों चोरों ने एक दूसरे से कहा- चाहे जो भी मंत्र पढ़ा हो तेनालीराम, लेकिन आज तो चोरी तेनालीराम के घर पर ही करनी होगी।

दोनों चोर रात के समय आए और तेनाली राम के घर में रखी तिजोरी से सारा धन चुरा ले गए। सुबह जब यह बात राजा के दरबारियों को पता चली, तो वे सभी तेनालीराम पर हंसने लगे और एक दूसरे से तरह- तरह की बातें करने लगे, लेकिन तभी तेनालीराम दो चोरों को बेड़ियो में बांध कर राजदरबार में ले आया और राजा से कहा महाराज, मैंने चोरों को पकड़ लिया है।

यही हैं वे दोनों चोर जिन्होंने पूरे राज्य में जगह- जगह चोरियां की हैं और इन्होंने अपनी सभी चोरियों को स्वीकार भी कर ली है।

राजा ने उन चोरों को सजा सुनाई और फिर तेनालीराम से पूछा कि तुमने इन चोरों को कैसे पकड़ा।

तेनालीराम ने कहा- महाराज मैंने ही राज्य में यह बात फैलाई थी कि मुझे एक ऐसा मंत्र मिला है, जिसको पढ़ने से घर में चोरी नहीं होती। मुझे मालूम था कि चोरों तक भी यह बात जरूर पहुंची होगी और चोर अपने कभी न पकड़े जाने के अहंकार वश मेरे ही घर चोरी करने के लिए जरूर आएंगे। परिणामस्वरूप मैं पहले से ही कुछ सिपाहियों के साथ अपने घर में छिपा हुआ उस कमरे की निगरानी कर रहा था, जहां तिजोरी पड़ी थी। जैसे ही ये चोर चोरी करने आए, सिपाहियों ने उन्हें पकड़ लिया।

इस प्रकार से तेनालीराम ने बुद्धिमत्ता पूर्ण तरीके से चोरों को पकड़ कर राजा व राज्य के निवासियों को चिंता मुक्त किया व राजा ने तेनालीराम की बुद्धिमत्ता के कारण उसे कीमती हीरे जवाहरातों से पुरूस्कृत किया।

इस छोटी सी कहानी का तात्पर्य है कि समस्या चाहे कितनी ही बड़ी क्यों न हो, यदि बुद्धिमत्तापूर्ण तरीके से उसे हल करने की कोशिश की कोशिश की जाए, तो किसी भी समस्या का समाधान आसानी से किया जा सकता है।

विरासत है, झील की कदरदानी कर देना !
सियासतदानों थोड़ी मेहरबानी कर देना !!

बड़ी मुश्किल से आई ये माँ रूठी फिर से !
गोमती के लालो जरा निगहबानी कर देना !!

माँ बच्चे को भूखा देख नहीं सकती हैं मगर
इसकी इज़्जत की ना पशेमानी कर देना !!

हक़ का बांटो मगर नाहक़ ना दे देना यारों
फिर सूख जाएं ऐसी ना नादानी कर देना !!

समझाइश से निकलते हैं विवादो के रास्ते !
राजसमन्द का मान ना पानी पानी कर देना !!

राजनीति के अखाड़े में, वोटो की खातिर
झील के वजूद से यूं ना बेईमानी कर देना !!

खुशियों से लबरेज़ है शहर का हर शख्स !
उम्मीदों को, मातम की ना कहानी कर देना !!

दीक्षित की नसीहत है, मान लो तो ठीक !
कही फिर वही गत ना पुरानी कर देना !!

शब्दार्थ, निगहबानी, रक्षा करना !
पशेमानी, शर्मिंदगी (लल्जित करना)

मुक्तक

बयान- ए- झील -ए- राजसमंद

जूनून -ए-इश्क़ के ये दिल-ए- दरिया बहने दो,
मेरे जहन- औ-जिगर में इक समंदर रहने दो!

बड़ी मुश्किल से आई खुशियां लबरेज हो के
मैं राजसमंद हूं मुझे राजसमन्द ही रहने दो!!

कवि परिचय

नाम : सूर्य प्रकाश दीक्षित
शिक्षा : बीए
जन्मतिथि : 22.08.1971
पिता : गोपालकृष्ण दीक्षित
पता : सेठ भगवानदासजी की हवेली, छिपा का मोहल्ला, कांकरोली, जिला राजसमन्द

सचिव द्वारकेश राष्ट्रीय साहित्य परिषद राजसमन्द
काव्य गोष्ठी मंच संचालक सदस्य
साकेत साहित्य संस्थान सदस्य
साहित्य, कला, संस्कृति परिषद

रूची : गजल, कविता, मुक्तक
डाक पता : आशापुरा टेंट हाउस, सेठ भगवानदास मार्केट, जलचक्की रोड़, कांकरोली राजसमन्द
मोबाइल : 9414621730

कान्यो जीवतो पूरबज वेई ग्यो

विजय शर्मा @ राजसमंद

वात आसोज रा मईना री है। जदी खेतां में मक्की ऊबी ही। मक्या पाकवा लागा, तो कोई काटवा भी लागी ग्या। डालू बा रे खेत में मक्की अगेती ही, जो पाकी न हुकवा लागी। डालू बा दो दिन में खेत री मक्की काटी न ओगो लगाई दीदो। मक्की रा ओगा में हुड़ा गणा पड़वा लागा। रखवाळी रे वाते डालू बा रो भायो कान्यो खेत पर बैठी ग्यो। दन में मक्या हेकईन खावा की हड़क लागी। कान्यो दौड़ीन घरे ग्यो और माचिस ले आयो। पछे मक्की रा ओगा रे भड़े वादी लगायो और हरा मक्या हेकवा लागो। तेज हवा चालवां लागी, तो वादी भड़की ग्यो। देखतां देखतां अतरी ला लगवा लागी कि पूरो ओगो जलीन वानो वेइग्यो। वणी ओगा मेइज एक कुतरी वीआई ही। कुतरी न वणीरा बस्या बारने नी निकळी सक्या। वादी में जली ग्या।

यो देखतां ही कान्यो घबराई ग्यो। होचवा लागो। अबे मुं घरे जाऊं तो मने डोकरां मारी नाकी। खेतांऊ दौड़तो लगो बस स्टैंड जातो रेइग्यो। वटे सेठजी मुंबई जावां ने खड़ा हा। सेठजी बोल्या भाया कठे जाई रो। भायो कान्यो बोल्यो सेठजी जठे मजदूरी मल्यी जावे। वठे चल्यो जाऊं। सेठजी बोल्या चाल अणी बस में बैठ। यूं कान्या घरे वना वतावे मुंबई चल्यो ग्यो।

अठीने, गांव रे खेत में मक्की रा ओगा में ला लगती देख डालू बा रे हाथे कतराई गांव वाळा आई ग्या। ओगा में कुतरी री हाडक्या मली, तो गांव वाळा होचो कि कान्यो वादी में जलीन मरीग्यो। घर- गांव में रोवा कुटो मच ग्यो। गांव वाळा वणी कुतरी री हाडक्या री गांठड़ी बांध घरे लाया। पछे वणी हाडक्या ने मातरी कुण्डिया में वेवाई दीदी। थोड़ा दना केड़े सब लोग भूली ग्या।

थोड़ा दन निकल्या। एक दन डालू बा री लुगाई अणछी रे पेट में दुखवां लागो। डालू बा दौड़ीन ग्या भोपाजी कोडे। भोपाजी ने भाव आयो। पछे बोल्या- डालू थारे छोरो कान्यो पूर्वज बैठी। अनी आकड़ी लेई लो। थाणे घरे सब आराम वेई जाई। डालू बा आकड़ी लीदी कि वैशाखी पूनम तक पूर्वज बैठा देवां। दो तीन दन केड़े अणछी रे पेट दुखणो बंद वेई ग्यो। पूनम भड़े आई तो डालू बा कान्या ने पूरबज बैठावां री तैयारी करवा लागा। पूरा गाम रा लोगा ने खबर लागी कि डालू बा रे घरे पूरबज बैठावां रो परोगराम है।

जतरे गांव रो नान्यो नौकरी ढूंढतो ढूंढ़तो मुंबई में वणी सेठजी री दुकान पे ग्यो, जठे गांव रो कान्यो नौकरी पे हो। कान्या ने जीवतो देख नान्या रां कान खड़ा वेइग्या। पछे नान्यो बोल्या। अरे कान्या थारे घरे तो खेतां पे बावजी बेठाई रा है। थने पतो है कि नी।

यो हुणीन कान्यो सेठजीऊं बोल्यो- अबे नराई दन वेइग्या। घरे जाइन पाछो आई जाऊं। सेठजी बोल्या जा, पण जट आई जाइजे।

सेठजी रो यो बोलणो वीयो, न कान्यो गाबां थेला में भरीन रवाना वेइग्यो। मुंबई ऊं बस में बैठो। दूजे दन गांव रा बस स्टैंड पर पोची ग्यो। जतरे वने ओगा में वादी लगवा री वात याद आई गी। पुराणी वात याद आवाऊं डरवा लागी ग्यो। होचवा लागो कि मुं घरे जाऊं तो मने डोकरा मारी नाकी।

वो सीधो खेत पे ग्यो, जठे पूर्वज बैठवां रो चबुतरा वणाई राक्यो हो। वने भड़े नीमड़ो हो, जणी पे चढ़ीन कान्या बैठ ग्यो। जतरे ढोल रा ढमाका रे हाथे भोपाजी ओतरता लगा नजर आया। वणारे पाछे नराई गांव वाळा चाली रीया हा।

भोपाजी ओतरता लगा हाकळ उठाईन मोरा पे मारवा लागा, जतरे वणारी नजर उपरे नीमड़ा पे पड़ी, जणी पे कान्यो बैठो लगो नजर आयो। यो देख ने भोपाजी रो भाव जातो रियो। कान्या ने नीचे उतरवा री आवाज लगाई, पण कान्या बोल्यो- मुं नी उतर सकुं। मने मारा बापू ठोकी नाकी।

गांव वाळा बोल्या- थने कोई नी मारे। पण थुं अतरा दन कठे हो। गांव वाळा भरोसो दीदो। पछे वो नीचे उतर आयो और बोल्यो मुं तो मक्कीया हेकी रो हो पण ओगा में वादी लगी ग्यो जणी कारण मु मुम्बई नाई ग्यो।

यो हुणताइ भोपाजी री भोपाई रो सच हामे आई ग्यो। गांव वाळा खूब हस्यां। अणी तरीका ऊं कान्यो जीवतां इ पूरबज वेई ग्यो। पछे गांव वाळा बोल्या-यो तो अंधविश्वास है ! गणा भोपा रे साळे नी लागणों।

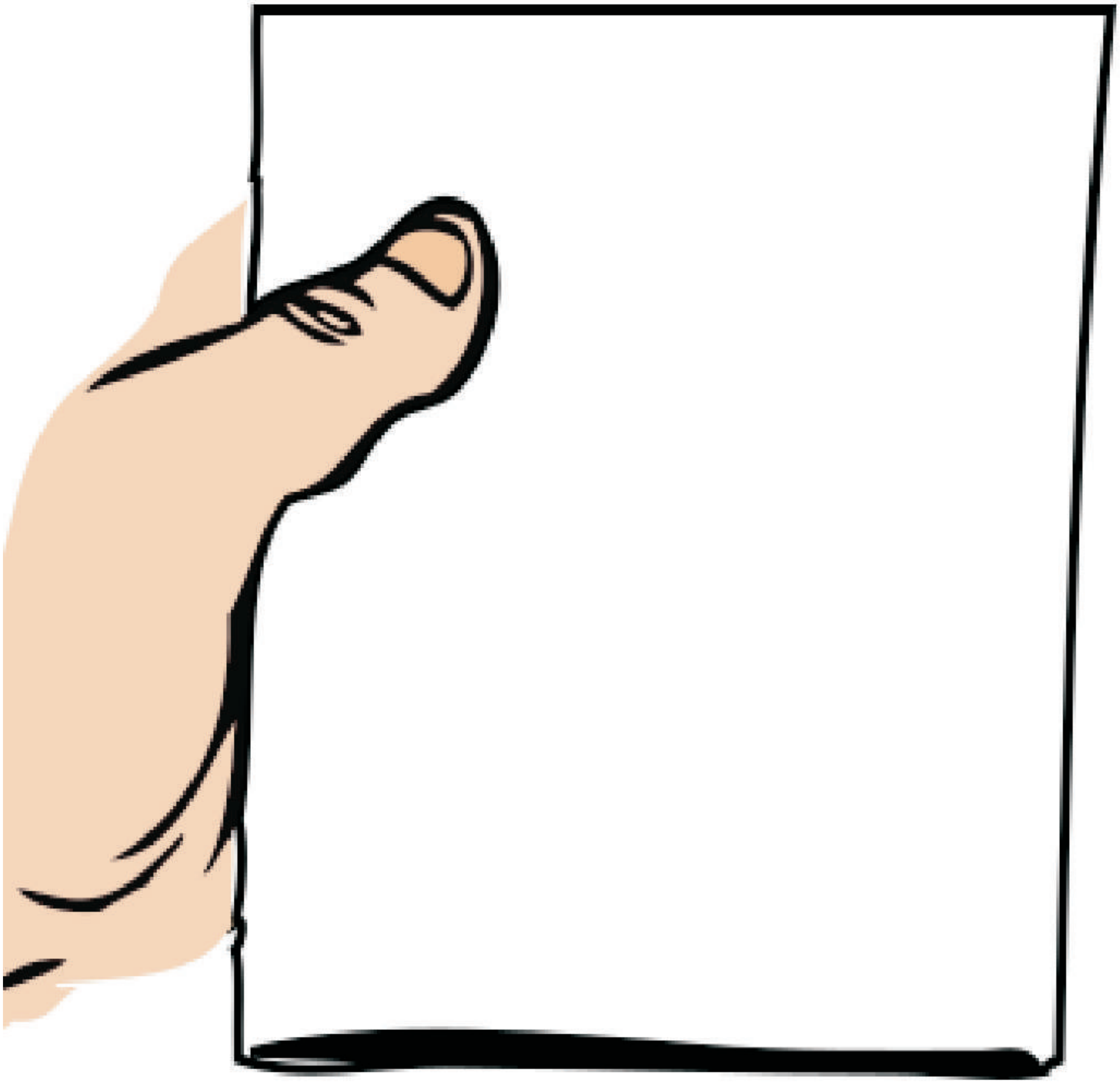

यह पेज पाठकगणों को समर्पित है

इस पत्रिका को बेहतर बनाने का हमने काफी प्रयास किया हैं, मगर आपके सुझाव आवश्यक हैं। आपकी प्रतिक्रियाएं हम इस कॉलम में प्रकाशित करेंगे, कृपया अवश्य भेजें।

कार्यालय पता : शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट, कांकरोली, जिला राजसमंद

Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

कड़वा सच

पिद्दी का शोर 'बा'

अपने भूतपूर्व बचपन को कभी याद करें तो हिन्दी में 'गाय' तथा अंग्रेजी में 'काऊ' पर निबंध लिखने को परीक्षा में आता ही था हम सभी ने रटी रटाई 10 पंक्तियों में 'गौमाता' को याद किया ही था जिसमे 'काऊ इज अ एनिमल' तक की कन्फर्म बातें हुआ करती थीं। वक्त बदला...गाएं तो गौरक्षकों ने ओट लिया और बचे रह गए 'पिग्गी' और 'डॉगी' जो हर शहर गांव की हर गली सड़क पर स्वच्छंद विचरण करने को स्वतन्त्र होकर मुल्क के सच्चे लोकतन्त्र होने का फायदा उठा रहे हैं। लिहाजा गायों पर अब निबन्ध नहीं लिखे जाते अब निबंध या राष्ट्रव्यापी चर्चा का विषय डॉगी ही रह गए हैं और डॉगी भी कोई गली मोहल्ले का कुरकुरिया नहीं किसी वीवीआईपी का हो तो चर्चा होना लाजमी ही है। अरे भाई जब वीवीआईपी दिनभर चर्चा में रहते हों तो उनका पेट (प्रिय) डॉगी काहे पीछे रह जाए उसको भी तो मीडिया ओपर्चुनिटी मिलनी ही चाहिए, उनके आगे पीछे कोई और तो है नहीं जब पापा नेता थे तो मम्मा साथ या पीछे चलती थी अब मॉम भी साथ नहीं रहती, बहन जीजा बड़े कारोबारी हैं तो इनको अकेले ही घूमना फिरना रहना पड़ता है तो इस प्यारे 'पीडी' या पिद्दी का ही सहारा है हमारे अधेड़ युवा नेताजी को हमारे इन लोकप्रिय नेताजी का यह प्यारा डॉगी पिद्दी आजकल ट्वीटिया भी लेता है। जाहिर है मुझसे तो ज्यादा जानकार और समझदार है पिद्दी तब ही तो पिद्दी का एतना सोर बा, जमाने भर में पहले कहावत होती थी 'क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा' अब तो ज़माने भर में पिद्दी का ही शोर है हर चैनल पर पिद्दी महाराज प्रतिष्ठित हैं और बाकायदा मालिक के निर्देश पर सलाम बजा रहे हैं और मालिक का तो क्या है कभी मुल्क के मालिक हुआ करते थे अब जब मिलकियत चली गई तो भी उनका मुल्क और इसकी रियाया से व्यवहार वैसा ही 'मालिकाना' हक वाला ही है। मालिक को गुस्सा बहुत आता है और गुस्से में वे अक्सर बाहें चढाते देखे जा सकते हैं, गली मोहल्ले के छुटभैये दादा पहलवानों की तरह, गुस्से में वे अपने ही ऐसे एक पेट पीएम का अध्यादेश भी मंच से फाड़ डालते हैं। ऐसे ही कभी वे अपने कुरते की जेब फाड़ लेते हैं और गुस्से में आकर बैंक से लाये गए 4 हजार रुपयों में साल भर निकाल लेते हैं। मालिक जब ज्यादा गुस्सा हो जाते हैं तो देश और उसकी गरीब जनता को अपने हाल पर छोड़कर 'लम्बे अज्ञातवास' पर निकल लेते हैं। किसानो को लेकर जब गुस्साते हैं तो दुपहिया पर तिबल सवारी बैठकर खेत खलिहानों में से खड़े खड़े आते हैं और टीवी पर चिंता प्रकट कर निकल जाते हैं। मालिक को ख़बरों में बने रहने की कला अच्छे से सिखा दी गई है, वे अगर गलती से भी 'महिला प्रसाधन' में रोंग साइड घुस जाते हैं तो भी मीडिया उन्हें हाथोंहाथ लेता है और अपने पिद्दी को लेकर मजाक करते हैं, जो उनका स्वभाव नहीं है तो भी मीडिया उन्हें गंभीरता से ले लेता है। मालिक ने अभी तक मुल्क को कभी गंभीरता से नहीं लिया इसलिए ये मुल्क भी उनको ऐसे ही कभी गंभीरता से नहीं लेता मालिक 125 करोड़ लोगों को अपना परदेसी पिद्दी समझ कर मजाक तो मत करो। आप उसे निर्देश दे रहे थे। नमस्ते करो.. चलो नमस्ते करो... होल्ड करो... मालिक, हमारी तो पीढियां खप गईं आप मालिकों को झुक कर सलाम करते... और रहा सवाल होल्ड करने का तो कब तक होल्ड करें मालिक... 70 बरस तो हो गए होल्ड पर पड़े पड़े... नोटबंदी और जीएसटी से वैसे ही होल्ड क्या फोल्ड पड़े हैं... मालिक हम तो आपके पिद्दी जो हैं...

मुकेश जोशी, उज्जैन
mukeshjoshi61@gmail.com

संगीत का राग मिटाता हैं रोग

कला और विज्ञान का गहरा जुड़ाव है। वहीं भारतीय शास्त्रीय संगीत ने मानव शरीर व प्रकृति में सीधा संबंध बनाया है। यही कारण है कि शास्त्रीय संगीत का मानव शरीर पर सकारात्मक प्रभाव पडता है। सभी प्रकार के रागों से आत्मिक सुख की अनुभूति तो होती ही है। इन संगीत चिकित्सा रागों को रोग निवारण में भी उपयुक्त माना गया है।

आज हम ऐसे रोग की चर्चा कर रहे है, जो शारीरिक भी है व मानसिक भी। संगीत में इस रोग के लिए सम्पूर्ण निदान की व्यवस्था है। संगीत व भगवान दोनों अहसास और अनुभूति है। संगीत सुख प्रदान करता है तो भगवान परमसुख उपलब्ध कराता है। बहुत सारे पहलवान या शारीरिक सौष्ठव वाले व्यक्ति अपने आपको क्षणभर निशक्त समझना शुरू कर देते हैं। ये मानसिक दुर्बलता व कमजोरी होती है, लेकिन कुपोषण, खानपान और रोगो से उत्पन्न शक्तिहीनता, हमारे शरीर के कई अंगो की शिथिलता से उत्पन्न होती है।

ये रोग की वजह भले ही मानसिक हो या शारीरिक लेकिन इस की वजह से व्यक्ति हताश, निराश और उदास महसूस करता है। कई तरह के व्यायाम दुर्बलता को दूर करने में सहायक होते है। पोषक तत्वों से भरपूर खानपान भी शक्ति प्रदान करता है लेकिन दुर्बलता मानसिक और शारीरिक दोनों की वजह से हो उसमें सिर्फ संगीत ही बल प्रदान करता है। सीमा रेखा पर हमारे सैनिकों को भी ऐसा ही संगीत रोज सुनाया जाता है कि वे हर वक्त अपने आपको बलवान और ऊर्जावान महसूस करते हैं। सैनिको को सीमा पर मानसिक रूप से दृढ और निडर बनाया जाता है उसमें संगीत की भूमिका अहम है।

बच्चों को मानसिक दृढता प्रदान करने के लिए प्रार्थना से लेकर कई तरह के संगीत स्पर्द्धा के आयोजन स्कूलो में नित्य किए जाते है। हमारा राष्ट्रीय गान और राष्ट्रीय गीत भी दृढता का प्रतीक है। आइए आप भी अपने आपको बलवान व ऊर्जावान बनाने के लिए रागो पर आधारित फिल्मी गीत गाए या ध्यान से सुने, अवश्य लाभ होगा।

रमेश कोठारी
संगीतज्ञ एवं ज्योतिषी, सिरोही-9414325450

पंडित उमेश द्विवेदी
महामंत्री-सनातन वैदिक शिक्षण संस्थान, कसार

मासिक राशिफल : नवम्बर 2017

मेष राशि : यह महीना मिला-जुला होगा। मन बेचैन रहेगा। प्रतिष्ठा को लेकर सचेत रहे। विरोधियों से भी अर्थलाभ की भूमिका बनेगा। पारिवारिक कटकटि से दूर रहे। कोई खबर उदास करेगी। मांसपेशियों में कुछ कष्ट संभव है। कानूनी पचड़ों से बच कर रहे।

शुभ दिन : 5, 6, 16, 19, 24, 28

अशुभ दिन : 2, 3, 7,

वृषभ राशि : सतर्कता से विरोधी परास्त होंगे। सट्टे से हानि होगी। चिकित्सा खर्च बढ़ेगा। वरिष्ठजनों से विशिष्ट सहयोग मिलेगा। शरीर के निचले हिस्से को लेकर सतर्क रहे। जीवनसाथी का चट्टा जैसा सहयोग भाव विभोर कर देगा। वक्तृत्व क्षमता से लाभ प्राप्त होगा। कोई भूला याद आएगा।

शुभ दिन : 6, 9, 14, 17 ,21, 27

अशुभ दिन : 3, 8, 12, 15, 21, 26

मिथुन राशि : जलने वाले लोग परास्त होंगे। साथ ही आध्यात्मिक रूचि जगेगी और आत्मनिवश्वास में वृद्धि होगी। रूका हुआ धन वापस मिलेगा। किसी मित्र से दशकों बाद मुलाकात होगी।

शुभ दिन : 2, 5, 15, 20, 21, 22

अशुभ दिन : 6, 7, 9, 18, 19, 26

कर्क राशि : यूं तो यह माह आर्थिक दृष्टि से उत्तम है, पर अल्पकालिक निवेश से कोसो दूर रहे। अन्यथा लाभ हानि में बदल जाएगा। छोटी छोटी चुनौतियां सर उठाएगी। ऋण से राहत मिलेगी। श्रम का फल मध्यम मिलेगा। मानसिक उलझनें भी उत्पन्न होगी। कला के प्रति रूझान बढ़ेगा।

शुभम दिन : 7, 8, 9, 14, 15, 27, 28

अशुभ दिन : 1, 2, 11, 13, 21, 22

सिंह राशि : इस माह में मित्र की सलाह पर आंख मूंद कर भरोसा न करें। वाहन का सुख प्राप्त होगा। यात्रा की योजना बनेगी। सम्पत्ति से लाभ होगा। आत्मविश्वास सुख भी देगा और शांति भी। आध्यात्मिक चिंतन प्रकट होगा। सही दिशा में प्रयास रंग लाएगा। विनम्रता से से लाभ होगा।

शुभ दिन : 2, 7, 15, 16, 25

अशुभ दिन : 4, 6, 12, 21, 22

कन्या राशि : इस माह में आर्थिक लाभ के स्पष्ट संकेत मिल रहे हैं। किसी के ऊपर टीका टिप्पणी से बचें। अधिक सोच विचार से सिर्फ भ्रम बढ़ेगा। कोई अ%छी खबर मन प्रसन्न करेगी। तुनकमिजाजी और बहस से नुकसान होगा। बड़े या नए खर्च की संभावना है।

शुभ दिन : 4, 7, 8, 14, 21, 23

अशुभ दिन : 10, 11, 12, 19, 28

तुला राशि : इस माह आर्थिक लाभ और व्यय दोनों बने रहेंगे। ध्यान रखें कि नीयत में सुधार के बिना स्थिति नहीं सुधरेगी। किसी व्यक्ति विशेष से तनाव मिलेगा। स्वजनों से तकरार होगी। स्वास्थ्य में नरमी बनी रहेगी।

शुभ दिन : 6, 7, 8, 15, 16, 24

अशुभ दिन : 3, 11,12, 13, 21

वृश्चिक राशि : यह माह उत्तम है। नए और मौलिक विचारों से कॅरियर में विशिष्ट लाभ की संभावना है। मानसिक क्षमता से धन का लाभ होगा। दंत विकार से कष्ट संभव है। निंदा, आलोचना और शिकायत से आर्थिक कष्ट बढ़ेगा। लग्जरी सुख मिलेगा।

शुभ दिन : 4, 7, 14, 15, 22, 24

अशुभ दिन : 2, 8, 12, 17, 18, 19

धनु राशि : कॅरियर के लिहाज से समय उत्तम है। किसी मित्र के सहयोग से लाभ मिलेगा। इस महीने कोई ख्याल स्थिति निर्मित होगी, जो मन को मस्त कर देगी। वाद विवाद, मुकदमे में विजय श्री वरण करेगी। पराक्रम व बौद्धिक कुशलता से धन व आनंद दोनों हासिल होंगे।

शुभ दिन : 1, 3, 4, 5, 15, 18

अशुभ दिन : 6, 8, 15, 16, 25

मकर राशि : माह में कॅरियर व जॉब का दबाव रहेगा। किसी चिर प्रतीक्षित कार्य में सफलता संभव है। किसी विचारों में खोए रहेंगे। मां से उनकी सलाह से लाभ होगा। किसी असहज स्थिति से बाहर निकलेंगे। खर्चों पर नियंत्रण रखें। ऋण से राहत की योजना पर विचार करेंगे।

शुभ दिन : 8, 9, 18, 22, 29

अशुभ दिन : 4, 6, 12, 24, 26

कुंभ राशि : शासन से सहयोग मिलेगा। स्थान परिवर्तन की भी संभावना पर विचार होगा। प्रतिभा निखर कर आएगी। ज्ञान में इजाफा होगा। किसी महत्त्वपूर्ण टास्क के पूर्ण होने से आत्मिक सुख की प्राप्ति होगी। कॅरियर में पद और कद में वृद्धि होगी।

शुभ दिन : 2, 3, 4, 11, 18, 29

अशुभ दिन : 5,16, 17, 22

मीन राशि : अजीब परिस्थितियों से धून का लाभ होगा। पिता का हृदय दु:खी होगा। सरकार से भय महसूस करेंगे। कोई कानूनी कार्रवाई होश उड़ा देगी। छोटे समय के निवेश या सट्टे से बचकर रहें। असत्य संभाषण दूरगामी क्षति पहुंचाएगा। उदर कष्ट होगा। किसी सम्पत्ति से हानि होगी।

शुभ दिन : 2, 11, 20, 29, 30

अशुभ दिन : 7, 16, 17, 26

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम- श्री/श्रीमती...

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
1 वर्ष	12	240	90	150 रुपए

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,
कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

जयवर्द्धन के विशेषांक टेलीफोन हेल्पलाइन मात्र 50 रुपए में प्राप्त करें।

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुन: निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

अजहरी कम्प्यूटर एंड स्टाम्प टाइपिंग

स्टाम्प, इकरारनामा, वसीयतनामा, विक्रय पत्र (रजिस्ट्री), गोदनामा, दान पत्र (रजिस्ट्री), शपथ पत्र, ब्ल्यू प्रिंट, नक्शा-मकान प्लॉट, सभी प्रकार के फॉर्म

अजहरी कम्प्यूटर एण्ड ई-मित्र

स्केन, ऑनलाइन, मूल निवास, जाति, आय, जन्म, अल्पसंख्यक प्रमाण पत्र, सभी प्रकार के ऑनलाइन फॉर्म व टोकन

अधिकृत स्टाम्प विक्रेता

खलील मोहम्मद मो. 99293 65040, 70145 04996

पुरानी कलेक्ट्री के सामने, नगर परिषद के पास, राजसमंद

शक्ति होजरी हाऊस

चोरड़िया मार्केट के सामने, द्वारकेश मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद (राज.)

स्कूल यूनिफॉर्म के होलसेल व रिटेल विक्रेता

नन्दलाल तेली मो. 9460367158, 9602226759

अधिकृत विक्रेता : यार्डले, रूपा, लक्स बनियान & अन्डरवियर

सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच | राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर

sankalp

संकल्प कोचिंग क्लासेज

रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली

:: संकल्प टीम ::

रिजनिंग - राकेश चौधरी
शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल
राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर
मैथ- राजकुमारजी, चपराना सर, जयनारायणजी
हिन्दी - संदीपजी सहारण, संस्कृत - राजौरियाजी,
राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी
इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर
साइंस - भागीरथ चौधरी/एस.के. शर्मा
अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला
भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर, अनिल दुल्लड़ सर

रतन सर-निदेशक

संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

प्रेमशंकर पालीवाल
मो. 9672994921
9672994922

पालीवाल मिल्क प्रोडक्ट

पाश्चुराईज्ड मिल्क एण्ड मिल्क प्रोडक्ट

स्पेशियल छाछ,
बासुंदी,
लस्सी, क्रीम,
पनीर, मक्खन,
घी, आईस्क्रीम,
मावा, श्रीखण्ड
एवं
पैकिंग दूध

प्लान्ट :- बस स्टैंड धोइन्दा, जिला राजसमंद (राज.) फोन नं. 02952-222598
ब्रांच :- बस स्टैंड, जयमाला स्टोर के सामने, कांकरोली, जिला राजसमंद
फोन 02952-221598, मो. 9672994923
ब्रांच :- हिरण मगरी, सेक्टर 6 पुलिस स्टेशन के सामने, उदयपुर
फोन : 0294-2464921, मो. 9672994996